जिंदाणी मर गया

लेखिका - सुंदरी उतमचँदाणी

ट्रास्लेशन - गाइत्री

जल्दबाजी करने के बाद भी ऑफिस जल्दी पहुंचना मेरे लिए नामुमकिन सा है। उस दिन नाटक लिख कर समाप्त किया था इसलिए खुश था। बस एक ही धुन सवार थी जिन्दाणी के ऑफिस में लंच टाईम तक पहुंच कर उसे यह नाटक सुनाने की। हाथों को फूंक मारकर गर्म किया। फाईल को पढ़ना शुरू किया ही था कि फोन की घण्टी बज उठी। यारी दोस्ती के दायरे ने परेशान ही कर दिया है। ''पता नहीं किसका फोन है?'' सोचते हुए रिसीवर उठाया। फोन पर कोई भर्राई हुई सी आवाज थी। मैने पूछा, ''भाई कौन हो? जीन्दाणी हो क्या?''

भर्राई हुई आवाज ने बताया, ''जीन्दाणी मर गया।''

''क्या? जिन्दाणी मर गया।'' कहते हुए मेरे हाथ से रिसीवर फिसल गया। रिसीवर को पुन: उठाकर मैने पूछा था, ''कब?''

''आज सुबह, आठ बजे।''

मेरे तो होश ही उड़ गए। अभी पांच मिनट पहले ही तो जिन्दाणी से मिलने की सोच रहा था। सच कहा है किसी ने, बन्दे के मन में कुछ मालिक के मन में कुछ। अब मेरे 'नव आत्मा' नाटक का क्या होगा?

मन ने फटकार लगाई, ''तुझे जिन्दाणी की मौत का दुख नहीं है। बस इस बात का अफसोस है कि अब ड्रामा नहीं हो पाएगा।''

मैने जवाब दिया, ''हां मैने यह नाटक 'नव आत्मा' लिखते समय जिस चेहरे को जेहन में रखा था, वह जिन्दाणी ही था। वही तो मेरे नाटक की आत्मा था। उसका लज्बा चौड़ा शरीर जब रंगीन रौशनी के बीच आकर कहता कि साथियों! एक आइने पर पैर रखा और वह टुकड़े-टुकड़े हो गया। फिर आइने के हर टूटे टुकड़े में नजर आने लगा, नव आत्मा का अक्स। जमाने ने विश्वास के आइने पर नास्तिकता का पत्थर मारा है। लेकिन अजीब बात यह हुई है कि हर टुकड़ा बन गया है, नव आत्मा का अक्स। इस जमाने में हजारों इन्सान भगवान बन बैठे हैं। जिन्होंने देश के लिए स्वयं को उत्तरदायी बना डाला है...हम सिन्धियों ने भी...।''

अचानक पीठ पर किसी ने हाथ मारा। मुड़कर देखा सावलानी था। ''अरे दोस्त अपना जिन्दाणी मर गया।''

''नहीं, नहीं।''

''अभी-अभी फोन आया था।''

''दोस्तों को खबर दी है ?''

''मेरा तो मन ही खराब हो गया है।'' मैं गाल पर हाथ टिकाकर बैठ गया।

''अरे यार! वहां 'सज़्मान' नाटक के लिए हॉल बुक करवाने गए थे। अब जिन्दाणी के बिना मुज़्य रोल कौन करेगा ?''

''मेरे नए नाटक 'नवआत्मा' में भी तो जिन्दाणी का ही मुज़्य रोल था।''

सावलाणी हट्टा-कट्टा और जिन्दादिल साथी है, हमारा। नाटक की परमीशन लेना, हॉल बुक करवाने जैसे कई काम हम उसे ही सौंपते हैं। कई बार तो डायरेक्टर साहब उसकी प्रशंसा करते हुए कह देते हैं, सावलाणी के बिना यह नाटक इतना जल्दी मंचित हो ही नहीं सकता था।'' मगर आज सबको यह पता चल जाएगा कि जिन्दाणी के बिना तो नाटक का स्टेज पर आना ही नामुमकिन है।

''छोड़ो न यार। तुम तो औरतों की तरह आंसू बहा रहे हो। देखो मेरे हौंसले को देखो, मेरे लिए तो वह यार, दोस्त, सलाहकार और पता नहीं क्या-क्या था। अभी परसों ही तो उससे मुलाकात हुई थी।''

''सावलाणी! जरा बताओ तो, वह किसका यार नहीं था? आज तो हमसे भी ज्यादा हमारी कौम ने कुछ गंवा दिया है। जब वह सिन्धियों के दुख दर्द का इजहार करता था तब उसके शब्द इतने ज्यादा जज्बाती हो जाते थे, जैसे पूरी कौम का दर्द उसमें समा गया हो।'' मेरी आवाज भारी हो गई।

सावलाणी ने मेरा हाथ खींचते हुए कहा, ''बस यार, रूह था वह रूह, बिना किसी भेदभाव के सब लोगों से घुलामिल जाता था। भारत में नई सामाजिक क्रान्ति लाने के लिए ऐसे ही लोगों की जरुरत है। अब दोस्त, यहां बैठकर रोने से कुछ नहीं होगा। चलो उसकी पत्नी के पास चलकर पूछें कि अचानक यह क्या हो गया ?''

मैं लज़्बी सांस लेता हुआ खड़ा हो गया। सावलाणी ठीक ही कह रहा था। मैने अपने बॉस से इजाजत लेकर दूसरे दोस्तों को भी यह खबर दे डाली। क्योंकि मैं नाटकों के कारण पहले ही बहुत छुट्टियां ले चुका था इसलिए काफी अनुनय विनय के बाद छुट्टी मिल पाई।

सावलाणी बोला, ''मेरा दोस्त हीरानन्दाणी कार लेकर आ रहा है। साथ ही चलते हैं।''

मैने कहा, ''फिर तो उषा को भी फोन करके बुला लेते हैं। जिन्दाणी के नाटकों में उसकी आत्मा बसती थी।''

सावलाणी बोला, ''उसे फोन पर यह मत बता देना कि जिन्दाणी मर गया, वरना ऑफिस में ही रोना पीटना शुरू कर देगी।''

मैं भी जानता हूं कि हमारी इस सुन्दर सी कलाकार का रुदन उसके पल्लू में बंधा मेहमान सा है। लेकिन वह बिना किसी कारण के छुट्टी कैसे ले पाएगी ?

हमें हैरानी हुई थी जब वह फोन सुनते ही बोल पड़ी, ''अभी आ रही हूं।'' गजब का अधिकार है इन सुन्दर लड़कियों का अपने अधिकारियों पर।

अब समस्या यह थी कि इस लड़की को जिन्दाणी की मौत का समाचार कैसे दिया जाए? अगर इसने ऑफिस में रोना शुरू कर दिया तो पूरे ऑफिस में पेन डाउन स्ट्राइक शुरू हो जाएगा।

सावलाणी ने सुझाया, ''उसे बाहर चल कर बता देंगे।''

मैने कहा, ''बाहर जाकर बताने से तो समस्या और बढ़ जाएगी। उसे रोता देख रास्ते के आते—जाते लोग पता नहीं क्या सोचेंगे?''

''तो बताएगें ही नहीं। अरे ऐसी लड़की को फोन ही नहीं करना चाहिए था।''

''सुनो सावलाणी। उसे कहेंगे कि जिन्दाणी सीरियस है।''

यह सुझाव सावलाणी को पसन्द आया, अब बारी इन्तजार की थी।

आखिरकार हम सब हीरानन्दाणी की कार में बैठकर जिन्दाणी के घर की तरफ चल दिए। जिन्दाणी की बात आते ही हम दोनों चुप हो जाते। उषा की बेताबी ने उसकी पलकों को भिगोना शुरू कर दिया था। जिन्दाणी के घर की बेल बजाने पर उसकी पत्नी ने दरवाजा खोला। वैसे तो उसकी निगाहें हम सब पर आग बरसाती हैं क्योंकि देर रात तक जिन्दाणी को नाटक के लिए रोकने के जिम्मेदार हम ही थे। हम भी उसकी पत्नी से चिढ़ते थे। परन्तु आज, आज तो हम सबकी आंखो में इस औरत के लिए हमदर्दी का दरिया लहरा रहा था।

बस फिर क्या था? मैने तो उसे जिन्दाणी की कामयाबी के लिए रातों का सुख लुटाने वाली, ठण्डा खाना खान वाली, रातों को देर तक उसकी राह ताकने वाली देवी और जाने क्या—क्या उपाधियां दे डाली। उषा तो उसके गले से लिपटकर बोली, ''कहां सो रहा है जिन्दाणी?'' यह सुनते ही उसने तड़प कर खुद को अलग किया।

हम सब दोस्त यह देखकर हैरान थे कि सामने के कमरे में ड्रेसिंग टेबिल के आगे बैठा हुआ जिन्दाणी मोटे टॉवल से अपना सिर पौंछ रहा था।

''अरे जिन्दाणी तुम?'' हम तीनों के मुंह से चीख निकल पड़ी। दूसरे पल ही मैने गुस्से से उबलते हुए पूछा, ''यह फोन किसने किया था आज?''

''मैने किया था। क्या पूरे पन्द्रह दिन तक कोई अपने जिन्दा दोस्त को भी भुला सकता है? इसलिए मैं बोला था कि मर गया जिन्दाणी। क्यों, क्या मुझे गुस्सा नहीं आएगा?''

अरे भाई तीन घण्टे का नाटक लिखा है 'नव आत्मा'। सोचा था, सरप्राइज दुंगा।'' मैंने बताया।

लेकिन सबके तेज ठहाकों के बीच मेरी आवाज दब सी गई। उनके सामने मैं अप्रैल फूल बनकर जो खड़ा था।कॉलेज के टॉवर ने छह बजे का घंटा बजाया था, जब सरला और गुली ने आकर बलराम से टिकट मांगी। फुर्ती से टिकट फाड़ उन्हें पकड़ाते हुए बलराम ने कहा था, ''जल्दी जाओ, जलसा शुरू हो चुका है।''

सरला ने टिकट लेते हुए कहा, ''जलसे तो रोज ही देखते रहते हैं। गुली को जरा अपना चेहरा तो देखने दो, बलराम—बलराम कहकर जान ही खा गई है।''

गुली ने गुस्से से अपना निचला होठ काट जोर से सरला की पीठ पर मुक्का मारा।

सरला ने 'हाय मां !' कहते अपनी पीठ को सहला अपने घूटने की टक्कर से टिकट वाली मेज उल्ट दी। बलराम ने टिकट समेटने के लिए नीचे झुकते हुए कहा, ''हमारे ऐसे भाग्य कहां कि कोई हमें याद करे।''

गुली, सखी की शरारत समझ चुकी थी। उसे बलराम पर दया आ गई। वह भी नीचे बैठकर उसे टिकट समेटने में मदद करने लगी और हंस कर बोली, ''क्या तुझे इतना भी विश्वास नहीं है कि कोई तुझे भी याद करता होगा... ?''

बलराम को लगा जैसे टिकट समेटते—समेटते ही कोई हीरा हाथ लग गया हो। वह चुपचाप गुली के चेहरे को देखने लगा। उसके होंठों पर एक रस भरी मुस्कान, जो किसी कुंआरी कन्या को देख कर एक मर्द के होठों पर आ जाती है झलक उठी। आभार भरी निगाहें उठाकर बोला, ''यदि सचमुच कोई मुझे याद करता है तो मैं अपने बड़े भाग्य समझूंगा।''

सरला जो अभी भी अपनी पीठ को सहला रही थी उनको खुसपुस करता देख चिल्लाकर बोली, ''ऐ! देखते नहीं हो, यहां मैं भी खड़ी हूं। टिकट समेट रहे हो या आपस में खुसपुस कर रहे हो ?''

गुली और बलराम खड़े होकर हंसने लगे। उसी समय दो लड़के टिकट लेने के लिए आ पहुंचे।

''अब चलो भी।'' कहते हुए सरला ने गुली को बांह से पकड़कर खींचा। पीछे से सुनाई दिया था लड़के बलराम से कह रहे थे, ''भाई वहां क्या देख रहे हो ? वह तो उड़ गई, नार्थ पोल और साउथ पोल। ये तुझारे जाल में फंसने वाली नहीं।''

गुली ने हॉल में घुसते हुए कहा, ''यह तुमने ठीक नहीं किया। बलराम जैसे सीधे—सादे लड़के के साथ शरारत नहीं करनी चाहिए थी।''

''हाय रे हाय! कितनी हमदर्दी है बलराम के लिए। सुना है हमदर्दी तो प्रेम की सगी बहन लगती है, कहीं सुजान को न तुमसे हाथ मलने पड़ जाए।''

गुली ने जोर से सरला की पीठ पर चिकोटी काटी। सरला बदला लेने का मौका ढूंढ ही रही थी कि सुजान ने आकर उनसे टिकट ली और उन्हें सही जगह पर बिठाया। सीट पर बैठते ही सरला बोली, ''गुली की बच्ची! अब देखना, यह जलसा देखना हराम कर दूंगी। इतनी जोर से चिकोटी काटी है... ।''

सुजान जाते-जाते वापस लौट आया। आहिस्ता मगर रौब से बोला, ''यह क्लास रूम नहीं है। मेहरबानी करके औरों के आगे कॉलेज की इज्जत खराब मत करो।''

सरला ने क्षण भर के लिए उसे घूर कर देखा । अन्धेरे के कारण सुजान उसके मुड़े हुए कन्धे ही देख पाया। उसे पीछे से सुनाई दिया, ''मुंह का ट्राइंगल तो देखो। यह क्लास रूम नहीं है...हूं.. ।''और फिर किसी अपरिचित की हंसी। सुजान अपने तिकोने चेहरे पर हाथ घुमाकर नाक सिकोड़ता ग्रीन रूम की और बढ़ गया।

जलसा शुरू हो चुका था। सरला आस-पास बैठे लोगों को देखने लगी। किसी लड़की के ब्लाउज का गला पीछे से काफी बड़ा था जिसे देखकर सरला बोली, ''शायद ब्लाउज का आगे वाला हिस्सा पीछे की ओर पहन कर आई है।'' कोई टाईट कुर्ते के कारण टांगे जोडे बैठी थी जिसे देखकर बोली, ''देखो स्टेचू!''

गुली ने खीजते हुए कहा, ''या खुदा! यदि तुम मुझसे पहले मरोगी तो यकीनन पोस्ट मार्टम करवा कर देखूंगी कि तुझ्हारे अन्दर कौनसी मशीन फिट है, जो हर वक्त चलती ही रहती है... ?''

''अब तुम जब तक रो न दोगी तब तक के लिए बिल्कुल चुप।'' कहकर सरला ने होठों पर अंगुली रख दी। पीछे से भी किसी ने 'श..श....' बोल कर चुप रहने के लिए कहा था।

जलसा समाप्त होने पर उबासी लेती सरला खड़ी हो गई। गुली ने पूछा, ''मजा आया?''

मूंह टेढ़ा कर सरला बोली, ''बहुत बोर कर दिया तुझ्हारे सुजान ने।''

''पागल, मुझे तो प्रोग्राम बहुत अच्छा लगा।''

''था क्या इसमें? सिन्धी, सिन्धी! उफ बोरियत! सिन्धी और कलाकार?''

''औरों की कही मत कहो।''

'' *आर्ज़ एण्ड मीन* में रानी का दासी से मोह, उसे कहां से कहां पहुंचा देता है।''

''सिर्फ अंग्रेजी नाटकों के उदाहरण नहीं देने चाहिए सिर के दर्द। देखा नहीं ड्रामा इतना अच्छा था कि सारा हॉल जैसे उसके जादुई असर में था।''

''बस, बस! अब आगे भी बढ़ो। सुजान का प्रोग्राम हो और तुम तारीफ न करो?''

''लोग भी तो आगे बढ़े न। मुझे तो यही खुशी है कि आज हूटिंग नहीं हुई। बेचारे कलाकार इज्जत के साथ अभिनय तो कर पाए... ।''

कानों पर हाथ रख कर सरला बोली, ''हाय, हाय! सुजान की तारीफ का मौका हाथ से क्यों जाने दोगी?''

दोनों अभी दरवाजे से बाहर ही निकल रही थीं कि अचानक सरला को धक्का लगा। वह गिरते—गिरते बच गई लेकिन पैर मुड़ गया। सरला जैसे—तैसे हॉल से बाहर निकलकर कॉलेज के लॉन में आ बैठी और पैर को सहलाने लगी। गुली उसके पास खड़ी थी। उसका ध्यान सरला के कानों में पड़े हीरे के बुन्दों और गले के चमकते नैकलेस पर चला गया। हमदर्दी से बोली, ''दर्द ज्यादा हो रहा है क्या? पूरी पीली पड़ गई हो।''

''हट पागल!'' सरला ने आंसू भरी आंखों से हंसकर कहा, ''फ्लोरोसेंट लाईट जल रही है न, इससे हर चीज पीली नजर आती है।'' और उठकर लंगड़ाते हुए चल पड़ी। दूसरी बेंच तक पहुंचते पहुंचते उसकी चीख निकल गई। वह बैंच पर बैठ दर्द से कराहती हुई बोली, ''पता नहीं किसने दरवाजे से निकलते समय टांग अड़ा दी थी।''

गुली, सखी के दुख से परेशान होकर इधर-उधर देखने लगी। इतने में सुजान आ गया उसने पूछा, ''खैरियत तो है?''

''टैक्सी ले आओ न सरला का पैर मुड़ गया है।''

सुजान टैक्सी ले आया। दोनों सहेलियों को टैक्सी में बिठा, दरवाजे पर रखे गुली के हाथ को दबाते हुए धीरे से बोला, ''सहेली को समझा देना इतनी शरारत अच्छी नहीं होती। किसी दिन कोई मेरे जैसा मिल गया तो मुंह की खानी पड़ेगी।''

गुली समझ गई कि दरवाजे से निकलते समय टांग किसने अड़ाई थी।

परीक्षाएं करीब थी। कॉलेज के गेट पर खड़ी सरला बलराम से पूछ रही थी, ''बी.ए के पेपर होंगे? कम से कम दो -तीन वर्ष के होने चाहिए।''

''भाई, मैं तो केवल एक बार ही फेल हुआ हूं इसलिए मेरे पास तो एक ही वर्ष के पेपर हैं।''

''अरे, मैने तो सोचा था तुम दो चार चढ़ाईयां चढ़ चुके हो। खैर! मैं तो किताब पढ़कर कभी भी खुद को बोर नहीं करती। बस दो चार वर्षों के पेपर देखकर प्रश्न तैयार कर लेती हूं और मजे से अच्छे अंक आ जाते हैं।''

अचानक सरला की पीठ पर मुक्का लगा तो वह चौंक गई। गुली किस वक्त आकर उसके पीछे खड़ी हो गई थी उसे पता ही नहीं चल पाया था।

गुली ने कहा, ''तुज्हारे पास छ:वर्ष के पेपर तो पहले से ही पड़े हैं।''

हल्की मुस्कान की रेखा उसके होठों तक आकर गुम हो गई। मासूम सा चेहरा बनाकर कहने लगी, ''वह सब तो गुम हो गए। और बेशर्म, तुम यह क्या कह रही हो? मैं क्या छः साल तक बी.ए में फेल होती रही हूं? जो उतने पेपर... ?''

और ज्यादा सुनने के लिए बलराम नहीं रूका।

सरला नाक चढ़ाकर बोली, ''मनहूस कहीं की, मसखरी का मजा ही गंवा दिया।''

''तुझारा क्या है ? बस, मिल जाए कोई शिकार। बेचारे गरीब के दिल पर क्या बीती होगी ?''

''तुझे किस देव ने पकड़ रखा है, बता न ?'' कहते हुए गुली को बांह से खींचकर सरला ने घास पर बिठा दिया।

''तुझारी जलसे वाली शरारत के बाद बलराम हमारे घर आया था।''

''अच्छा! हद कर दी जनाब ने। लड़की तुमने तो मुझे बताया ही नहीं।''

''पहले बात तो सुनो। हमारे घर के लोग क्योंकि खुशमिजाज हैं इसलिए यह साहब हर दुसर-तीसरे दिन घर आने लगे। दादा ने अपने साथ भोजन खिला कर इनकी झिझक मिटा दी थी। एक दिन कहने लगा, 'आपके घर में इतनी रौनक है कि अपने घर जाने का मन ही नहीं करता।' मां से बातें करता, बच्चों को पढ़ाता, मुझे भी जिस चीज की जरूरत पड़ती वह बोलने से पहले हाजिर कर देता। बेचारे को विश्वास हो गया था कि मैं उसे बहुत चाहती हूं।''

सरला पेट पर हाथ रखकर हंसती चली गई।

''लेकिन पड़ौस में चर्चा होने लगी है कि बलराम गुली के घर रोज आता है।''

''तो क्या हुआ? कौनसा इन्कलाब आ गया? तुम लंगड़ी होती तो लोग कहते लंगड़ी है। कोई घर में आएगा तो लोग कहेंगे ही न कि फलां साहब गुली के घर रोज आते हैं...यह कोई बुरी बात तो है नहीं।'' हंसी सरला की छाती से मानो झरने के समान बहती चली जा रही थी।

''अब बात पूरी होने दोगी कि हंसती ही रहोगी ? '' गुली ने सरला की चोटी खींचते हुए कहा।

''बस, बस तौबा की मैने।'' चोटी छुड़ाकर गहरी सांस छोड़ सरला ने गुल्ली के घुटने पर हाथ मारते हुए कहा, ''अब तो लाओ न, रेल को पटरी पर...।''

गुली को घुटने पर शायद जोर से हाथ लगी थी बोली, ''अब नहीं लानी, रेल पटरी पर। पहले क्लास में चलो। सिन्धी का पीरियड शुरू हो गया होगा।''

''तुम बोर किए बिना न मानोगी...।''

दोनों उठकर क्लास में चली गई। सामी के श्लोकों पर टीका-टिप्पणी चल रही थी। सरला ने बलराम को गुली की तरफ निहारते देखा तो धीरे से बुदबुदाई, ''इस क्लास में दो साल के अनुभवी ही 'घर में घर की तरह घुसना' जानते हैं।''

पीरियड समाप्त होते ही सरला, गुली की कमर में चिकोटी काट उसे दूर घसीट कर ले गई। दालान में पार्टिशन रखा था। उसके दूसरी तरफ पहुंचकर कहने लगी, ''अब बको न, सुनू तो क्या बकती हो?''

गुली ने होठों में हंसी दबाते हुए बाल्कनी के नीचे फैली हरी घास पर खिले पीले फूलो पर अपनी नजरें जमा दी।

सरला ने आंखें हदखाते हुए कहा, ''ऐसे सताओगी तो मैं नाराज हो जाऊंगी।''

गुली ने दबी सी हंसी में हंसकर पूछा, ''पहले तुम बताओ उस बाल गोपाल के पीछे हाथ धोकर क्यों पड़ गई हो?''

''अच्छा, तो आग दोनों तरफ लग गई है।''

''हट पागल!'' गुली ने सिर झटकते चोटी आगे कर ली।

''हाए! नखरा तो देखो। बलराम क्लास में सारा समय तुझ्हें ही ताक रहा था।''

''क्यों? तुझ्हें जलन हो रही थी क्या? ''

''मर जा री। जले मेरी जूती। पहले तुम अपनी रामायण तो खत्म करो...।''

''फिर छेड़ोगी तो नहीं?''

''गुरू कसम।'' सरला ने अपने कानों को छूकर कहा।

''सुन!'' गुली ने आंखे मटकाते हुए बताया, ''दो—चार दिन पहले बोला था चलो एलीफेण्टा चलें। मैने कहा, नहीं बाबा। लोग जाने क्या —क्या बोलेंगे। तो कहने लगा, लोगों को तो दिखाना ही चाहिए।''

''अच्छा! इस बाल गोपाल की ऐसी हिज़्मत। हाए,हाए! बेचारा सुजान।'' कहकर सरला अपने सिर पर हाथ मारकर इस अन्दाज से खड़ी हो गई जैसे वास्तव में सुजान की दौलत लुटते देख ली हो। अचानक बोली, ''सच गुली, चली जाती न घूमने।''

''क्या फायदा?''

''मजा आता।''

''मर जा री, तुने ही ऐसे मजे लेकर अपने दोस्तों को नाराज कर रखा है।''

''छी:, मुझे किसी के नाराज होने की परवाह है क्या? हम तो अकेले आए हैं अकेले ही जाएंगे।''

''किसी के साथ घूमने में बुराई क्या है... ?''

''अच्छा छोड़ो अपनी बात। इस बाल गोपाल के विचार सुनो।''

जाकर मां से परमीशन लेता हुआ बोला कि मैं दुनियां के आगे नए आदर्श रखना चाहता हूं। लड़के लड़कियां साथ-साथ घूमें फिरें, इसमें बुराई तो नहीं हैं। मां ने कहा, 'बस! लड़के—लड़कियां फालतू घूमें- फिरें तो कोई बुराई नहीं है और मिलकर कोई देश सुधार का या दूसरा अच्छा काम करें तो बुराई है।' सरला, बस उस समय तुम उसका चेहरा देखती...।''

सरला के माथे की लकीरे गहरी हो गई। गुली अपनी ही धुन में बोलती जा रही थी, ''जैसे बासी बैंगन।'' और पेट पर हाथ रख जोर जोर से हंसने लगी।

परन्तु वह हंसमुख चंचला हंस नहीं पाई। कोई बारीक सी चुभने वाली चीज उसके दिल में कहीं गड़ सी गई थी।